(1) Ist Paper B.A. I Hons (History)

V.V.I

Q. Decline of Gupta Empire

Ans → गुप्त साम्राज्य का उदय जितनी ही उत्तेजना से हुआ उसी उत्तेजना की भाँति पतन भी हुआ। भारतीय इतिहास उसका महत्वपूर्ण साक्षी है। गुप्त साम्राज्य को समुद्रगुप्त एवं चन्द्रगुप्त मुक्त द्वितीय ने अपने पराक्रम से ऊँचा किया लेकिन कालान्तर में वह पतन के गर्त में चला गया। इस विशाल साम्राज्य के पतन एवं विनाश के कई कारण थे। सर्वप्रथम स्कन्दगुप्त के बाद गुप्त शासकों के परम्परा में कोई ऐसा पराक्रमी शासक नहीं हुआ जो गुप्त साम्राज्य की गिरती हुई स्थिति को रोक सके। अयोग्य गुप्त शासकों की लंबी परम्परा इस विशाल साम्राज्य को सुगठित रखने में असमर्थ रही। बुद्धगुप्त के बाद से गुप्त साम्राज्य का वास्तविक पतन प्रारम्भ हो गया था।

गुप्त साम्राज्य के पतन के साथ ही साथ स्थानीय राजाओं का अभ्युदय हुआ। हूणों का आक्रमण और सामन्त राजाओं की महत्वाकांक्षा ने गुप्त साम्राज्य को निर्बल बना दिया था। यशोधर्मा साम्राज्य के प्रदेशों को रौंद चुके थे। गोपचन्द्र के उत्तराधिकारी स्वतंत्र स्थिति प्राप्त कर चुके थे। चारों ओर नवीन शक्तियों का उदय हो रहा था। उत्तर प्रदेश में मौखरी, पश्चिम उत्तर प्रदेश और पंजाब में वर्द्धन, मगध में उत्तर गुप्त, और पूर्वी बंगाल में धर्मादित्य के वंश के राजाओं ने गुप्त साम्राज्य का नामो निशान मिटा दिया। विष्णुगुप्त चन्द्रादित्य इस पतन को अपनी आँखों देख रहा था, कारण वह असहाय एवं कमजोर था। 550 ई० के आसपास गुप्त साम्राज्य तहस नहस हो गया था। गुप्तों के वंशज मगध में स्थानीय राजाओं के रूप में रह गये। गुप्त साम्राज्य के पतन के निम्नलिखित कारण थे।

(i) पारस्परिक कलह → गुप्त राजवंशजों के पारस्परिक वैमनस्य ने गुप्त साम्राज्य के नींव को हिला दिया। राजकुमारों का वैमनस्य एवं स्वार्थपरता पतन का कारण

Scanned with CamScanner

2. बाह्य आक्रमण → शक्तिहीन सत्ता को देखकर विदेशी आक्रमणकारियों का मन बढ़ता है। जब गुप्त साम्राज्य अपने उत्कर्ष पर था, तब कोई विदेशी आक्रमण नहीं हुआ। जब हूणों ने आक्रमण किया भी तो स्कन्दगुप्त ने उनके दाँत खट्टे कर दिये। स्कन्दगुप्त के बाद शासक कमजोर पड़ गये और फिर हूणों ने आक्रमण कर दिया 485ई० के बाद मध्य भारत पर हूणों ने अपना अधिकार कर लिया था। हूणों की शक्ति धीरे-धीरे बढ़ती गई और उनका संगठन सम्भव नहीं हो सका।

3. आन्तरिक दुर्बलता → कमजोर शासक उनका मुकाबला करने में असमर्थ रहे। राज्याधिकार के लिए उनके संघर्ष ने भी साम्राज्य की शक्ति को कमजोर बना दिया था। वे न तो प्रतापी शक्तिशाली थे न तो नीति निपुण थे। वे अपने प्राचीन सम्बन्धी तथा मित्रों के साथ अच्छा सम्बन्ध कायम नहीं रख सके। उनकी अकर्मण्यता तथा अनभिज्ञता से भी साम्राज्य का पतन निकट आ गया।

4. सामन्तों की स्वतंत्रता → केन्द्रीय शासन की निर्बलता से लाभ उठाकर प्रांतीय शासकों ने अपनी स्वतंत्रता घोषित कर ली। सुदूर प्रांतों पर शासन करना असंभव हो गया। सामन्त स्वतन्त्र में राजा बन बैठे। पश्चिम में वल्लभी मालवा, उत्तर में थानेश्वर, कन्नौज, तथा पूर्वी भारत में गौड़ शासक स्वतंत्र हो गये। इन शासकों के अपनी राज्य विस्तार की अभिलाषा से गुप्त साम्राज्य का अंत हो गया।

ऐरण अभिलेख में ईशानवर्मा को महाराजाधिराज कहा गया है। इससे अनुमान लगाया जाता है कि 554ई० तक गुप्त साम्राज्य का पतन हो गया था। उत्तरकालीन गुप्तों के उत्थान से भी गुप्त साम्राज्य का पतन हुआ। गुप्त साम्राज्य के पतन के कारणों में एक प्रमुख कारण था, परवर्ती गुप्त शासकों का सैनिक आवश्यकता विषय में उदासीन होना।

गुप्तवंश के प्रारंभिक शासक वैष्णव धर्मा
के। परवर्ती शासकों ने बौद्ध धर्म का अनुसर
अहिंसा और शान्ति पर आधारित नि
का अनुगमन किया उससे सैनिक कार्यो
उपेक्षा हुई। इसके परिणामस्वरूप उन
जैसी सामरिक प्रतिभा न रही। फलतः
आक्रमणों का सामना करने में असमर्थ
इस सम्बन्ध में ह्वेन सांग ने विवरण
हूण शासक
कि जब 'मिहिरकुल' ने गुप्त सम्राट
पर आक्रमण किया तो बालादित्य ने अप
से कहा ~~कि~~ "मैंने सुना है कि लाटा चो
रहे हैं और मैं उनसे युद्ध नहीं कर स
मेरे मंत्रीगण मुझे अनुमति प्रदान करें तो मैं पंक वि
में छुप छुप जाऊं।"

गुप्त शासकों की आंतरिक औ
नीति भी पतन का कारण बनी। आन्तरिक दृष्टि से
ने अपने पूर्वजों की तरह कठोर दंड नीति की परम्प
परित्याग कर दिया तथा अत्यन्त उदार दंड व्य
सहारा लिया। इस प्रकार गुप्त साम्राज्य जिसमें
भारत की चतुर्मुखी उन्नति हुई, वह गुप्त ~~काल~~ जि
जिसका शासन काल, भारतीय इतिहास का स्वर्ण
काल कहा जाता है या जो भारत में पेरीक्लीज यु
नाम से विख्यात है, उपर्युक्त कारणों के फल
पतन की राह में चला गया।